Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 3, Issue3, Feb 2014
ISSN: - 2348-0459

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित माखनलाल चतुर्वेदी : एक अनुशीलन

डॉ. (श्रीमती) नीलम सैनी

सारांश

इतिहास का जब हम सिंहावलोकन करते है तो हमे विदित होता है कि, हम किस तरह की यातनाओं को सहन करके आगे बढे है । पराधीनता की वह रात्रि जिसमें व्यक्ति को कोई रास्ता नही दिखाई देता था, वहा कुछ सैनिक मशाल लेकर आगे बढ़ रहे है । इन मशालों के अनेक रुप थे जिसमें व्यक्ति को रास्ता नही दिखाई देता था, वहां कुछ सैनिक मशाल लेकर आगे बढ रहे थे । इन मशालों के अनेक रुप थे जिसमें माखनलाल चतर्वुदी दुहरी मशाल लिये हुए सैनिक के नाते अग्रसर हुए । देश के लिये सबसे पहले विचारों की क्रांति बहुत जरुरी थी उसे माखनलाल ने अपनी कलम रुपी तलवार से प्रभा रुपी पत्रिका में खूब निखारा । इस तरह मध्यप्रदेश की स्वतंत्रता पूर्व राजनीति में आपने नेता के रुप में भाग लिया ।

खोज शब्द –यातनाओं, सिंहावलोकन , स्वतंत्रता

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश में कांग्रेस की स्थापना करने वाले में वे अग्रगण्य थे । 12 मार्च 1921 के अभिभाषण पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया तथा जुलाई 1923 को 3 माह का सश्रम कारावास की सजा हुई । वर्तमान युग के ओजस्वी हिन्दी सैनिक तथा स्वतंत्रता संग्राम के त्यागशील सेनानी गोविन्ददास के शब्दों में – '' 1920 के असहयोग आन्दोलन में मध्यप्रदेश में कोई व्यापक दमन नही हुआ , मध्यप्रदेश में तीन ही प्रधान व्यक्ति गिरफ्तार किये गये –पं0 माखनलाल चतुर्वेदी, पं0 सुन्दरलाल और महात्मा भगवानदीन। '' उन्हे राजनीति में प्रवेश कराने का श्रेय माधवराव सप्रे को था । वे माखनलाल को अधिक प्यार करते थे । वे लोकमान्य तिलक से प्रभावित थे । वे स्वयं क्रांतिकारी होते हुए गांधीवाद से प्रभावित थे । माखनलाल जी ने स्वयं सन् 1906 में दशाश्वमेध घाट पर गंगाजल और गीता हाथ पर रखकर देश पर बलिदान होने की प्रतिज्ञा की थी । सन् 1913–14 के अक्टूबर माह में लखनऊ सम्मेलन में उनकी श्री गणेश शंकर विद्यार्थी से मुलाकात हुई, वे स्वयं क्रांतिकारियों के साथ थे । उनके भेजे क्रांतिकारी यहा खण्डवा में रहते थे । गणेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क से राजनीति और साहित्य दोनो एक साथ माखनलाल जी के जीवन के अंग हो गये थे ।

यदि हम लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, पं0 मदनामोहन मालवीय, लाला लाजपतराय, देशबन्धु दास, और मोतीलाल नेहरु को किसी राजनीतिक पद पर न रहने पर भी राजनीतिक क्षेत्र में उच्च नेता मान सकते है तो मै माखनलाल चतुर्वेदी को भी मानता हूँ । इस प्रकार सार्वजनिक जवीन में प्रवेश के बाद वे अपने क्रांतिकारी विचारो को साहित्य के माध्यम से व्यक्त करते थे । सन् 1921 में जिस असहयोग आन्दोलन का कार्य माखनलाल ने किया उसका फल उन्हे तत्काल मिला । 12 मार्च 1921 को उनके बिलासपुर में दिये भाषण के सन्दर्भ में उन्हे गिरफ्तार किया गया । उन पर देशद्रोह का आरोप लगाते हुए कहा गया कि, उन्होने ब्रिटिश हिन्दुस्तान कानून से स्थापित सरकार के प्रति घृणा और द्वेष का भाव उत्पन्न किया । जहां तक 12 मार्च के भाषण का सवाल है वह निश्चय ही बेबुनियाद था । सच्चाई यह थी मध्यप्रदेश की तत्कालीन सरकार उनकी कार्यवाहियों से घबड़ा उठी थी। उन्हे गिरफ्तार करने के अवसर के तलाश में थी । इससे उन्हे 12 मार्च 1921 को गिरफ्तार किया गया । 14 मार्च 1922 को उन्हे कारावास से मुक्त किया गया ।

सन् 1921 में माखनलाल स्वतंत्रता के अवरोधो को एक तरफ कंधो का सहारा दे रहे थे दूसरी तरफ हथकड़ियों का साज पहने थे, तीसरी तरफ वे अपनी कलम के सहारे अपनी मातृभूमि के बंधन पर वज्र प्रहार कर रहे थे ।

मध्यप्रांतीय सरकार ने 13 मई 1930 को 5 नेताओं को गिरफ्तार किया जिनमें सर्वश्री श्री गोविन्ददास, पं0 द्वारका प्रसाद मिश्र, पं0

रविशंकर शुक्ल, पं0 माखनलाल चतुर्वेदी और विष्णुदत्त भार्गव थे । इन सभी नेताओं पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया और 12 मई 1930 को जबलपुर के मजिस्ट्रेट मि0 लीले ने फेसला सुनाया , जिसमें चतुर्वेदी को पुनः एक वर्ष के लिए भेज दिया गया । 18 मार्च 1931 को कारावास से मुक्त किया गया ।

चतुर्वेदी जी स्वयं एक समर्पित स्वांतत्रयोद्धा थे सन् 1923 ई0 से सन् 1942 ई0 तक अनेक बार उन्हे तत्कालीन ब्रिटिश शासकों का कोप भाजन बनकर कारावास के कष्टों का प्रत्यक्ष अनुभवन करना पड़ा । सार्वजनिक जीवन तत्कालीन स्थितियों में क्षण–प्रतिक्षण भागीदारी का निर्वाह उन्होने पूरे मनोयोग के साथ किया जिसके फलस्वरुप उनकी जीवन दृष्टि ही राष्ट्र प्रधान हो गयी । उनका विश्वास था कि, दृष्टि का काम बाह्य देखना भी है और भीतर भी, जब वह बाहर देखती है तब रचनाओं पर समय के निशान पड़े बिना नही रहते जब भीतर को देखती है तब मनोभावनाओं के ऐसे चित्रण कलम पर आ जाते है जिन्हे समय द्वारा शीघ्र नही पोंछा जा सकता है । इस परिप्रेक्ष्य में देखने पर उनकी विचार श्रंखला का तारतम्य स्पष्ट होता है और आनंदित करत है उनकी तन्मयता का स्वर सौदर्य उनकी प्रत्यें रचनाओं की पृष्ठभूमि के कारणभृत प्रसंग विशेष तो है ही तंजन्य भावाकुलता भी रहती है इसे कविमन की अनुभूमि जन्य गहराई और वेदना प्रमाणीकरण होता है ।

माखनलाल के कठोर कारावास के उपलक्ष में देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उनके सम्बंध में कहा कि मेरा यह विश्वास है कि, पं0 माखनलाल चतुर्वेदी स्वतंत्र रहने की अपेक्षा कारावास में रहकर अपनी मातृभूमि की अधिक सेवा कर रहे है । चतुर्वेदी ने अनेक शारीरिक एवं मानसिक कठिनाईयों को सहने कर अपने कदमों को कभी रोका नही । वास्तव में जेल तो उनका मंदिर था जिसमें उन्होने देश के बंधनो को काटने का साहित्यिक शस्त्र तैयार किया जो भारत माता के अंचल के बंधनो को तोडने में कभी निस्तेज नही हुये । इस प्रकार उनके राजनैतिक आन्दोलन का साहित्यिक जीवन आज भी हमारे भविष्य के रास्ते सुलझाता है ।

संदर्भ सूची

1	वार्ता प्रसंग	श्री हरिकृष्ण त्रिपाठी	171
2	माखनलाल चतुर्वेदी –एक अध्ययन	नर्मदा प्रसाद खरे , श्री इन्द्रबहादुर खरे	150
3	माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व	प्रेम नारायण टंडन	72
4	माखनलाल चतुर्वेदी	रामाधार शर्मा	27